रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2021–23

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 45 ● अंक – 10 ● कानपुर 16 से 31 मई 2023 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

समय की माँग है

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को व्यवसायिक बनाया जाये

वर्तमान युग अर्थ का युग है, हर व्यक्ति अर्थ के पीछे दौड़ रहा है, इसलिये वह वही कार्य करना चाहता है जिसमें अधिकाधिक आर्थिक आगमन हो सके इस अर्थ को पाने के चक्कर में हर व्यक्ति अर्थकारी ज्ञान ही अर्जित करना चाहता है, समाज सेवा ज्ञान के लिये, विद्या आजके परिदृश्य में प्रसंगिक नहीं दिख रहा है, प्रासंगिक हो भी तो कैसे! जिसे तेज़ी के साथ समाजिक व्यवसायों में परिवर्तन आ रहा है, उसके अनुरुप स्वयं को ढालने के लिये धन की आवश्यकता होती है, बिना धन के आज के युग में कुछ भी सम्भव नहीं है भावनाओं के लिये वही स्थान है जहाँ धन का आगमन दिखता है, वर्तमान युग में समाज सेवा भी बिना धन के सम्भव नहीं है, इन सब बातों से स्पष्ट होता है कि जीवन का संचालन बिना धन के सुचारु रुप से कदापि सम्भव नहीं है, यह सारी बातें लिखने का आशय यह है कि आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में जिस नीरस्ता ने स्थान बना लिया है वह दूर होने का नाम ही नहीं ले रही है, यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक गम्भीर विषय है, इस विषय पर गम्भीरता से विचार होना चाहिये, आज से 30–35 वर्ष पूर्व देश में हज़ारो छात्र/छात्रायें पूरे मनोयोग से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का अध्ययन किया करते थे एवं अध्ययन के उपरान्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपने जीवन यापन का आधार बनाते थे, परन्तु गुज़रे कुछ वर्षों में जो कुछ भी घटनायें हुयीं उसने इलेक्ट्रो होम्यापैथी की तस्वीर को एकदम से बदल कर ही रख दिया है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जिन लोगों में जो गज़ब का उत्साह था आज वह उत्साह दूर–दूर तक नज़र नहीं आता है, अखिर इसकी वजह क्या है? सामान्य अर्थों में सब अपने–अपने हिसाब से व्याख्या करते हैं पर इसके मूल में क्या है यह ज़रुर जानना आवश्यक है, आज से 40 वर्ष पहले इलेक्ट्रो होम्यापैथी मात्र इस कारण ज़िन्दा थी क्योंकि लोगों में यह भाव था कि आने वाले समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की भांति शासकीय संरक्षण प्राप्त होगा, यदि हम सबकुछ जानते हैं तो आज स्थिति यह है कि देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये क्रमशः 25–11–2003, 05–05–2010 व 21 जून, 2011 के रुप में भारत सरकार द्वारा जारी आदेश है, इन आदेशों के द्वारा देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन को गति एवं ऊर्जा प्राप्त होती है।

भारत वर्ष के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विधि सम्मत ढंग से संचालित होते रहने के लिये प्रदेश के चिकित्सा विभाग द्वारा बाकायदा 04 जनवरी, 2012 को बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिये शासनादेश जारी किया जा चुका है, यह आदेश प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये संजीवनी से कम नहीं है परन्तु आश्चर्य होता है कि इतने अच्छे आदेश का भी वह प्रभाव नहीं पड़ा रहा है जो वास्तव में पड़ना चाहिये।

11 वर्षों का समय लगभग समाप्त होने को है

EH डा0 अतीक अहमद
रजिस्ट्रर B.E.H.M. U.P.

लेकिन प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के मध्य जो उत्साह होना चाहिये वह अभी दूर–दूर तक नज़र नहीं आ रहा है, इससे जो परिदृश्य उभरकर सामने आता है वह कोई क्रान्तिकारी संदेश नहीं दे रहा है, इस कछुआ चाल की गति से मात्र चिकित्सा ही नहीं अपितु इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े व्यक्तियों के मन में भी कोई खास परिवर्तन नहीं आ रहा है, यह मात्र एक राज्य का दृश्य नहीं है बल्कि पूरे देश की कमोबेश स्थिति यही है, इन सारी बातों पर महज़ चिन्ता से नहीं काम चलने वाला है, अपितु इस पर गम्भीरता से विचार कर एक दूरगामी निर्णय लेना होगा, यह निर्णय मात्र एक व्यक्ति , एक संगठन, एक संस्था को नहीं लेना है, ऐसे निर्णय सामूहिक होने चाहिये देश में जितने भी वर्तमान व पूर्व इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्था संचालक हैं उन सभी को हर बिन्दु पर दृष्टि डालते हुये कोई ऐसा सर्व स्वीकार मार्ग निकालना चाहिये जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का हित हो सके एवं विकास की गति आगे बढ़ सके।

आज आप किसी भी राज्य के इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े व्यक्ति से बात कर लें चाहे वह चिकित्सक हो या संस्था संचालक उत्साह पूर्वक आपसे बात नहीं करेगा, यह समझने की बात है कि उत्साह के स्थान पर अनुत्साह ने स्थान क्यों ले लिया है ? ऐसा नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये या लोगों को उत्साहित करने के लिये एवं चिकित्सकों को जागरुक करने के लिये लोगों द्वारा कार्य नहीं किया जा रहा है (आपको सम्भवतः याद होगा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को जागरुक करने के लिये बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने तो वर्ष 2000 में चिकित्सक जागरुकता अभियान तक चलाया था) अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये पहले से अधिक जागरुकता कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, यदि हम विभिन्न संगठनों द्वारा चलाये जा रहे अभियान पर एक दृष्टि डालें तो यही नज़र आता है कि कार्य तो किया जा रहा है, कार्य तो बहुत हो रहा है परन्तु परिणाम सामने पटल पर आने चाहिये वह अभी भी प्राप्त नहीं हो रहे हैं, इससे हताश या परेशान होने की आवश्यकता नहीं है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि एक ऐसी व्यापक रणनीति बनानी चाहिये जिससे कि लोगों के मन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति पुनः निष्ठा का भाव उत्पन्न होवे ऐसा होगा नहीं ! यह सम्भव नहीं है, केवल हमें और आपको अपने कार्य एवं अधिकारों के प्रति अधिक सजग रहना होगा कोई भी व्यक्ति जब पूरे मनोयोग से किसी भी कार्य को करता है तो उसे पूरा होने में कोई सन्देह नहीं रहता है, विलम्ब होना अथवा असमायिक बाधायें आना यह सब सामान्य बातें हैं क्योंकि किसी लक्ष्य की प्राप्ति न हो, यह असम्भव नहीं है।

शेष पेज 2 पर

हमने तो ऐसा सोचा न था यह कहाँ आगये

बात 1953 की है जब हर एक के कानों में वह आहट जो उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा सुनायी गयी थी वह आज भी कानों में गूँज रही है जिसमें ऐसा लग रहा था कि शीघ्र ही भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता प्रदान कर दी जायेगी, परन्तु कुछ ही दिनों के बाद ऐसा आभास होने लगा कि मानों केन्द्र सरकार ने अपनी बला टालने का मन बना लिया और सरकार ने अपना पीछा छुड़ाने के उद्देश्य से मान्यता रुपी गेन्द को राज्य सरकार के पाले में उछाल कर यह जताने का भरपूर प्रयास किया कि आपकी आवाज़ को हमने गम्भीरता से लिया है और आपकी समस्या का निदान राज्य सरकारों द्वारा करा जायेगा, अब जो भी हो केन्द्र सरकार से वार्ता न कर सीधे राज्य सरकारों से सम्बंधित लोग सम्पर्क करें केन्द्र सरकार ने अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी, यह दिखाने का पूरा प्रयास किया कि केन्द्र सरकार मान्यता देने के पक्ष में है परन्तु राज्य सरकारें इस पर स्वयं पहल करें।

अब राज्य सरकार को क्या पड़ा है कि वह आपकी की बात को गम्भीरता से लेकर चिन्तन मनन करे! क्या राज्य सरकारों के पास काम की कमी हो गयी है ? उनके पास तो स्वयं समस्याओं का अम्बार लगा रहता है, पहले वह पुरानी समस्याओं को ही हल कर लें, तभी आपकी ओर ध्यान जायेगा, राज्य सरकारों की स्वयं की अनेक समस्यायें होती हैं जो वर्षों प्रतीक्षा में केवल इस लिये कतार में होती हैं कि कभी न कभी उनका नम्बर भी आयेगा परन्तु देखा यह गया है कि समस्यायें स्वयं समस्या बनकर ठण्डे बस्ते में चली जाती हैं जो कभी बाहर तक नहीं आ पाती हैं, यह क्रम सन 1973 तक पहेली ही बनकर रहा।

1973 से लेकर 1983 दस वर्षों के लम्बे अन्तराल तक उस समय की इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्थाओं ने अपने – अपने ढंग से अनेंकों प्रयास किये जिसमें प्रमुःख रुप से उत्तर प्रदेश व बिहार की इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सेंस्थायें अग्रणी की भूमिका में रहीं, आन्दोलन विभिन्न स्तरीय चला बात यदि उत्तर प्रदेश की करें तो इस राज्य के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक छात्रों ने विधान सभा के अन्दर और बाहर ज़ोरदार प्रदर्शन इस आशय से किया कि राज्य सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को राजकीय संरक्षण प्रदान करे (पाठकों को सम्भवतः याद होगा कि इस आन्दोलन में कानपुर के चिकित्सक छात्रों की भूमिका अग्रणीय थी युवा छात्रों को जब जोश आता है तो वे आगे पीछे कुछ नहीं देखते उनका टारगेट सिर्फ अर्जुन की भाँति केवल मछली की आंख दिखती है, अजुर्न को अपना आदर्श मानकर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक छात्रों ने विधान सभा के अन्दर व बाहर हर ओर तोड़ फोड़ चालू कर दी वे भूल गये कि जिस स्थान पर वे प्रदर्शन कर रहे हैं वह राज्य की विधान सभा है, पल भर में क्या से क्या हो जाये कोई सोच भी नहीं सकता, अन्ततः वही हुआ जिसकी कल्पना भी नहीं की गयी थी विधान सभा के अन्दर मार्शलों ने मोर्चा सम्भाला और बाहर घुड़सवार पुलिस ने अंग्रेजों के जुल्म की याद दिला दी, आन्दोलनकारी छात्र भी लगता था कि वे पूरी तैयारी से आये हैं छात्रों पर जब पुलिस की लाठियां पड़तीं तो छात्रायें उनकी ढाल बन जाती थीं और पुरुष पुलिस को अपना डण्डा रोकना पड़ जाता था) आन्दोलनरत छात्रों ने सरकार के समक्ष अपनी उपस्थिति एवं विरोध जताने के उद्देश्य से कानपुर से दिल्ली तक पैदल मार्च किया, बात और आन्दोलन यहीं समाप्त नहीं हुये कानपुर के ही इलेक्ट्रो होम्योपैथिक छात्रों ने अपने खून से लिखे ज्ञापन भी दिये, इतिहास साक्षी है कि जब जब कोई आन्दोलन कानपुर से प्रारम्भ हुआ तो वह सदैव सफल रहा, चाहे आज़ादी की बात करें या फिर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की, कानपुर सदैव चमका है, इन्हीं आन्दोलनों का परिणाम रहा है कि केन्द्र सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु एक जाँच कमेटी का गठन 1988 में कर दिया, इसे आप संयोग ही कहें कि इस जाँच समिति ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये जो बिन्दु निर्धारित किये थे वे आज भी यथास्थिति में हैं।

18 नवम्बर, 1998 का सवेरा शायद ही कोई भूल पाये जब माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय, नई दिल्ली का वह आदेश जिसमें उसने केन्द्र सरकार सहित सभी राज्य सरकारों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये पृथक कानून बनाने के लिये निर्देश दिये, इस आदेश में माननीय न्यायालय ने यह भी निर्देशित किया कि गैर मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों में डिग्री न जारी की जाये, माननीय न्यायालय ने यह भी सरकारों को निर्देश दिये कि डिपलोमा/प्रमाण–पत्र जारी करने हेतु मापदण्ड निर्धारित किया जाये, माननीय न्यायालय ने एक अन्य आदेश में यह भी स्पष्ट कर दिया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अपनी क्षमतानुसार प्रैक्टिस करें।

समय की माँग है .... (प्रथम पेज से आगे)

हमने लेख का प्रारम्भ अर्थ से किया था उसी बिन्दु पर पुनः आते हैं और अभी भी यही मानते हैं कि युग के परिवर्तन को देखते हुये कुछ ऐसे कदम उठाने चाहिये जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ने वाला हर व्यक्ति यह महसूस करने लगे कि इस चिकित्सा पद्धति से जुड़कर उसका भविष्य सुरक्षित है वह अपना जीवन यापन स–सम्मान सुगमता से कर लेगा यह बात कहने में तो बड़ा ही आसान लगता है परन्तु यथार्थ के धरातल पर उतारने के लिये हमें और आपको अथक परिश्रम करना होगा, जब किसी एक पीढ़ी को संर्घष करना पड़ता है तब आने वाली पीढ़ी आनन्द ले पाती है, वैसे संर्घष का समय तो लगभग समाप्त हो गया है अब केवल कार्य करने की आवश्यकता है आज हर वस्तु वैश्विक हो रही है इसलिये हमें हर निर्णय और हर कार्य परिस्थितियों को देखकर ही करना चाहिये, सफलता नहीं मिलेगी इस पर तनिक भी सन्देह नहीं करना चाहिये, रास्ते साफ हैं, कार्य करने के अवसर हैं अब तो और अच्छे अवसर बनते जा रहे हैं इसमें कोई भ्रम की स्थिति नहीं है, यदि कहीं पर कोई कमी है तो वह है हमारे चिकित्सकों के मध्य आत्म विश्वास की, जिस दिन यह आत्म विश्वास पुनःजागृत हो गया उस दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े व्यक्ति अपने आपको किसी से भी कमतर नहीं आंकेंगे पर इस आत्म विश्वास को जागृत करने के लिये हर समय प्रयास होता रहे यही समय की आवश्यकता भी है।

प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अधिकारिता जागरुकता अभियान आज भी बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्यापैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा चलाया जा रहा है, अन्य संस्थाओं द्वारा भी सम्मेलनों के माध्यम से कुछ कार्य किये जा रहे हैं वहीं कुछ लोग संघर्ष भी कर रहे हैं सभी का अपना–अपना दृष्टिकोंण है तभी तो सब अपने–अपने कार्य में लगे हुये हैं परन्तु सफलता की कोई आहट अबतक नहीं आ रही है, एक बिन्दु जो सबसे महत्वपूर्ण है वह यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिये इसमें आर्थिक उपलब्धता का दृष्टिकोंण भी अपनाना चाहिये सामान्य जन तक यह सन्देश पहुँचना चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से भी जीवन यापन आसानी से किया जा सकता है, जब यह सन्देश समाज में पहुँचेगा तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि व्यक्ति आपसे नहीं जुड़े, कोई भी आन्दोलन तभी चल सकता है जब उसमें नये लोग जुड़ते जायें, वर्तमान समय को देखते हुये नये लोग तभी जुड़ते हैं जब वह उसमें अपना भविष्य देखते हैं, सेवा, श्रद्धा जैसे शब्द अब अपनी परिभाषा बदल चुके हैं इसलिये नई परिभाषा के अनुसार ही आचरण होने चाहिये और व्यक्ति कुछ पाने की इच्छा करे क्यों ना! मनुष्य का जीवन पाया है तो उसकी भी अभिलाषा होती है कि वह जीवन के हर सुःख को भोगे, कष्ट पाने के लिये या कष्टों से लड़ने वाली मानसिकता लुप्त तो नहीं हुयी है परन्तु संख्या कम है, जब सुःख पाने के अनेक रास्ते खुले हैं तो काँटों में पैर कौन डाले गा ? इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी इस कदर उन्नत बनाना होगा कि युवा पीढ़ी स्वतः इस ओर आकर्षित हो, यह कहना जितना सुगम लग रहा है परन्तु है बहुत कठिन लेकिन असम्भव भी तो नहीं है, वास्तव में जो कार्य होने चाहिये वह मज़बूत मानसिकता वाला व्यक्ति ही कर सकता है, हमारे यहां मजबूत मानसिकता के व्यक्तियों की कोई कमी नहीं है, यह बात जरुर है कि अभी भी भ्रम की स्थिति से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं, जैसे ही उन्होंने अपनी अधिकारिता को पहचाना उस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ भी नामुमकिन नहीं रहेगा, बस इसी भ्रम की स्थिति को दूर करना हमारी प्राथमिकता है और हम धीरे–धीरे ही सही मगर सफल हो रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी बहुत ही मज़बूत स्थिति में है जो थोड़ी बहुत स्वनिर्मित कमी है वह भी दूर होती जा रही है इन सब बातों का एक ही सार है कि कार्य पूरे मनोयाग से होना चाहिये क्योंकि जब कार्य होगा तभी सरकार हमारे किये हुये कार्यों की समीक्षा करेगी जिसका भरपूर लाभ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संगठनों एवं चिकित्सकों को ही प्राप्त होगा।

आज की सबसे बड़ी समस्या है कि हमारा चिकित्सक कार्य तो कर रहा है परन्तु जिस उत्साह के साथ वह पहले कार्य किया करता था उस उत्साह में काफी कमी आयी है और आधे मन से किया गया कार्य कभी भी पूरे परिणाम नहीं देते हैं, पूरे परिणामों को प्राप्त करने के लिये सकारात्मक दृष्टि के साथ ऊँचे मनोबल को लेकर कार्य करना होगा, जब कोई इलेक्ट्रो होम्योपैथी का चिकित्सक अपनी पूरी क्षमता से चिकित्सा व्यवसाय कर जनता को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करे, परन्तु इस कार्य में पूरी पारदर्शिता होनी चाहिये, कहने का तात्पर्य यह है कि रोगी को यह पता होना चाहिये कि वह किस विधा से चिकित्सा ले रहा है, जब उसे आपकी चिकित्सा से लाभ मिलेगा तो वह स्वयं अन्य को भी बतायेगा कि मैंने अमुक चिकित्सक से चिकित्सा करायी है और मुझे लाभ प्राप्त हुआ एक व्यक्ति दूसरे से, दूसरा तीसरे से और इस प्रकार एक श्रंख्लाबद्ध प्रचार उस चिकित्सक को नाम और दाम दोनों प्रदान करेगा, उसको देखा देखी दूसरे चिकित्सकों में भी उत्साह का भाव जागेगा और वह भी उसी राह पर चलने लगेगा जहाँ उसका साथी चल रहा है, धीरे–धीरे इसका प्रभाव सभी साथियों पर पड़ने लगेगा और वह समय पुनः आ जायेगा जिसकी हम सब प्रतीक्षा कर रहे हैं, चिकित्सकों के इस उत्थान को देखकर युवा पीढ़ी जो अपने भविष्य के लिये योजनायें बनाती है वह युवा भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को व्यवसाय के रुप में चुनेंगे, फिर जिस आन्दोलन की सफलता की हम कामना करते हैं उसे सफल होने में देर नहीं लगेगी।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के 49वें स्थापना दिवस के अवसर पर आईये हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हर चिकित्सक अपनी क्षमता व योग्यतानुसार पूरे मनोयोग से कार्य करेगा और भावी जीवन को सुःखमय बनायेगा यदि हमारा चिकित्सक सुःखी है तो पूरा इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत प्रसन्न होता है, कार्य करने के बहुत से क्षेत्र हैं जैसे चिकित्सा, शिक्षा, औषधि निर्माण व साहित्य सृजन, किसी भी क्षेत्र में हम अपनी क्षमताओं का प्रयोग करते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं, यह सारे कार्य हमारे चिकित्सकों को ही करने हैं, इसलिये अब अनुत्साह के लिये मन मे कोई स्थान नहीं होना चाहिये और पूरा व्यवसायिक दृष्टिकोंण अपनाते हुये कार्य को आगे की ओर बढ़ायें यही हमारी कामना एवं अपेक्षा है कि आप कसौटी पर खरे उतरें, आज की आवश्यकता है कि हर व्यक्ति अपनी–अपनी ज़िम्मेदारी समझे एवं उसी के अनुसार कार्य करे, मात्र संस्थानों पर आधारित रहकर कार्य नहीं चलने वाला है, संस्थायें आपको अधिकार दिलवाती हैं और उन अधिकारों को प्रयोग कर सही उपयोग चिकित्सक ही कर सकता है, केवल बातों से काम चलने वाला नहीं है, चिकित्सक एक प्रोफेश्नल होता है, इसलिये एक प्रोफेश्नल के लिये सफलता के जो आवश्यक गुण होते हैं वही गुण आप में भी होने चाहिये क्योंकि सफल होने के लिये यह पहला मंत्र है कि धारा जिधर बह रही हो उधर ही बहो तभी सफलता भी मिलती है और वह सबकुछ अर्जित होता है जिसकी अपेक्षा हर किसी को होती है यदि हम धारा के विरुद्ध चलने का प्रयास करेंगे तो अनायास ही हम परेशानियों को स्वयं आमंत्रित कर लेंगे, देश में प्रचलित विभिन्न पद्धतियों की शीर्ष संस्थाओं ने अपनी पद्धति से सम्बंधित प्रोफेशनल्स के लिये मापदण्ड निर्धारित कर रखे हैं जिनके पालन के लिये वे समय–समय पर निर्देश भी जारी किया करते हैं जिनका अनुपालन कराने के लिये राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य अधिकारियों से प्रगति की जानकारी प्राप्त कर समीक्षा भी करते रहते हैं, इन सब के लिये बकायदा स्टेटिक्स डिपार्टमेन्ट तक खोला गया है।

अन्त में हम यही कहेंगे कि हमारा इलेक्ट्रो होम्योपैथ व्यवसायिक तो है परन्तु व्यवसायिक दृष्टिकोण में सर्वथा अभाव है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथों को प्रैक्टिस का पूरा अधिकार

बस आप अपने नाम के पूर्व EH Dr. ... लिखते रहें

प्रायः अप्रैल से अगस्त के महीने शैक्षणिक प्रवेश के महीने होते हैं, इन दो महीनों में हर शैक्षिक संस्थान यह पूरा प्रयास करता है कि उनके संस्थान में अधिक से अधिक छात्र प्रवेश लें इस हेतु हर संस्थान अपनी सुविधा के अनुसार छात्रों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन आदि करते हैं और अपनी विशेषताओं व भावी योजनाओं को भी बताते हैं बहुत सारे संस्थान नवजवानों को आकर्षित करने के लिए अपने ही संस्थान को देश का सर्वोत्तम संस्थान बताते हैं और बड़े–बड़े दावे करते हैं, हद तो तब हो जाती है जब यह संस्थान यह दावा करने लगते हैं कि उनके संस्थान से निकले हुए हर छात्र को रोज़गार की गारन्टी दी जाती है, यह बात कितनी सच साबित होती है यह तो कोर्स पूरा करने के उपरान्त निकले छात्र ही बता सकते हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्थानों में भी आजकल प्रवेश का वातावरण चल रहा है, जो भी संस्थान कार्य कर रहे हैं वह भी आपस में एक दूसरे से बढ़–चढ़ कर दावे करते हैं और अपने–अपने स्तर से प्रचार भी करते हैं, प्रचार करना आवश्यक भी है और समय की मांग भी है, परन्तु प्रचार करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि ऐसी कोई बात न प्रचारित की जाये जो समय आने पर कसौटी पर खरी न उतरे, इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चिकित्सा विज्ञान है जो कि अधिकार प्राप्त है और पूरे अधिकार के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को चिकित्सा का अधिकार प्रदान करती है आज बहुत सारे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोर्सों की तुलना पैरामेडिकल कोर्सों से कर रहे हैं और तरह–तरह के भ्रम फैला रहे हैं एक बात हर समझदार व्यक्ति को जान लेना चाहिये कि अपने देश में चिकित्सा के लिए दो तरह की व्यवस्थायें हैं एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति जिसे कि एलोपैथी या वेस्टर्न मेडिकल साइंस कहते हैं दूसरी व्यवस्था है जो एलोपैथी से इतर चिकित्सा विज्ञान हैं उन्हें पारम्परिक व वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति कहते हैं, इन चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी, योगा, नेचुरोपैथी, सोवा–रिग्पा व इलेक्ट्रो होम्योपैथी आदि हैं, पैरामेडिकल कोर्स सहायक के तौर पर चलाये जाते हैं, पैरामेडिकल कोर्सों को प्रैक्टिस करने का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त नहीं है, वह केवल सहायक अथवा संयुक्त रूप में कार्य कर सकते हैं जबकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोर्स पूर्ण करने के उपरान्त व्यक्ति को स्वतंत्र रुप से प्रैक्टिस करने का पूरा अधिकार प्राप्त होता है, जो लोग यह कहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से बेहतर पैरामेडिकल कोर्सेस हैं उन्हें अपनी सोच में परिवर्तन लाना होगा कि पैरामेडिकल कोर्सेस सहायक बनाते हैं न कि चिकित्सक।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोर्स करने के उपरान्त विधिवत पंजीकरण कराकर कोई व्यक्ति देश के किसी भी कोने में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा व्यवसाय कर सकता है तथा स्वावलम्बी होकर धन और यश दोनों अर्जित कर सकता है, सरकार से लगातार पत्र व्यवहार व कार्यवाहियां चलती रहती हैं बहुत सम्भव है कि किसी भी दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह सब कुछ प्राप्त हो जाये जो अन्य पद्धतियों को प्राप्त है।

आज की स्थिति में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की भाँति ही चिकित्सा व्यवसाय करने के पूरे अवसर प्राप्त हैं इसलिए हमें अपने प्रचार में इस बात को प्रमुखता से प्रचारित करना चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी अधिकार प्राप्त चिकित्सक बनाती है और यही पैथी है जो पूरे अधिकार के साथ अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह चिकित्सा व्यवसाय हेतु अधिकृत है, इस बारे में भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 21 जून, 2011 को आदेश भी जारी किया जा चुका है और प्रदेश में 4 जनवरी, 2012 को बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 शासन द्वारा शासनादेश भी जारी किया जा चुका है यद्यपि इन आदेशों को लागू हुए लगभग वर्षों हो चुके हैं परन्तु बड़ी संख्या में ऐसे लोग भी आज मौजूद हैं जो यह नहीं जानते कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश राज्य सरकार दोनों से आदेश प्राप्त हैं, इन आदेशों में साफ–साफ कहा गया है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा, चिकित्सा, रजिस्ट्रेशन, अनुसंधान हेतु सरकार की ओर से पूर्ण सहमति है।

देखा गया है कि प्रदेश में कुछ पैरामेडिकल विद्यालय चल रहे हैं जिनमें से हजारों प्रतिवर्ष कोर्स पूरा करके बाहर निकलते हैं उनमें से कितनों को नौकरी मिलती है इस बात के गवाह आंकड़े स्वयं हैं, यह सत्य है कि अभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय सेवा में अवसर नहीं प्राप्त हो रहा है लेकिन ऐसा भी नहीं है कि इसकी सम्भावनायें न हों, सम्भावनायें प्रतिपल बनी रहती हैं और हमें विश्वास है कि निश्चित तौर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथ भी एक दिन शासकीय सेवा का अंग बनेंगे और अपनी उत्कृष्ट सेवाओं से जनता और समाज का ध्यान आकर्षित करेंगे, सम्भवतः प्रचार की कमी के कारण लोगों तक अभी भी इन आदेशों की जानकारी नहीं है इसलिए जानकारी के अभाव में लोग बाग तरह–तरह के तर्क वितर्क करते रहते हैं, यद्यपि प्रवेश के सम्बन्ध में अभी तक अच्छी रिपोर्ट उपलब्ध हो रही है प्रदेश में जहाँ–जहाँ भी बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से सम्बद्ध विद्यालय व केन्द्र संचालित हो रहे हैं वहाँ से नव प्रवेशार्थियों के बारे में अच्छी सूचनायें प्राप्त हो रही हैं, ऐसा अनुमान है कि इस वर्ष प्रवेशार्थियों की संख्या में अच्छी खासी वृद्धि होगी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी का परिवार और मजबूत होगा, जिन संस्थानों या केन्द्रों में अभी शिथिलता चल रही है उन संचालकों को चाहिये कि वे आक्रामक प्रचार करें और अपने आस–पास निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन करें इन शिविरों के माध्यम से जनता की सेवा भी होती है और लोगों का यह भ्रम भी दूर होता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से प्रैक्टिस करने का अधिकार नहीं है, लोगों में जागरूकता पैदा करना चाहिये और यह सन्देश देना चाहिये कि निजी क्षेत्र में प्रदेश में आज सिर्फ इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही एक मात्र ऐसी चिकित्सा विधा है जो सम्मान पूर्वक ढंग से चिकित्सा का पूरा अधिकार देती है, जो लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोर्सों की तुलना पैरामेडिकल कोर्सों से करते हैं उन्हें भी स्पष्ट रूप से बता दीजिए कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोर्स करने के बाद छात्र स्वतन्त्र रूप से चिकित्सा व्यवसाय कर सकता है और अपने अधीन किसी भी सहायक को रख सकता है जबकि पैरामेडिकल कोर्स करने के बाद छात्र सिर्फ प्रशिक्षित सहायक के रूप में ही कार्य कर सकता है, यदि कोई पैरामेडिकल छात्र स्वतन्त्र रूप से प्रैक्टिस करता है वह अधिकारों का अतिक्रमण करता है जबकि इलेक्ट्रो होम्योपैथ अधिकार पूर्वक प्रैक्टिस करता है।

- ✓ विधिक व अधिकृत संस्थानों में ही लें प्रवेश
- ✓ इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही देती है प्रैक्टिस का अधिकार
- ✓ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य करने के हैं पूरे अवसर
- ✓ बोर्ड के अलावा प्रदेश स्तर पर कोई अधिकृत नहीं
- ✓ पैरामेडिकल कोर्सों से कोई तुलना नहीं

कुछ हो या न हो आज जब हर ओर छात्र अपने भविष्य के प्रति चिन्तित है और कैरियर के प्रति जागरूक है इसलिए कोर्सों का चयन बहुत ही समझबूझ कर करता है ऐसे छात्र जो चिकित्सा के क्षेत्र में अपने को आज़माना चाहते हैं उनके लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी कोर्स एक बेहतर विकल्प के रूप में उपलब्ध है, जीव विज्ञान के क्षेत्र में सम्भावनायें सीमित हैं जीव विज्ञान का छात्र पहले तो चिकित्सक बनना चाहता है यदि किसी कारण से वह चिकित्सक नहीं बन पाता है तभी अन्य विकल्प तलाशता है, उन विकल्पों में बायो–टेक्नोलॉजी व पैरामेडिकल कोर्सेस हैं लेकिन इन्हीं में वह छात्र भी होते हैं जिनका स्वयं का व अभिभावकों का सपना होता है कि उनका अपना पाल्य डाक्टर बने ऐसे लोगों के लिए सिर्फ और सिर्फ इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही एकमात्र सहारा है, वर्तमान में चिकित्सा जगत में सिर्फ इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा के कोर्स ही विधिक रूप से स्वीकार व मान्य है और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक कोर्सों को कराने के लिए उत्तर प्रदेश में एक मात्र उ0प्र0 शासन द्वारा अधिकृत संस्थान है, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0, इसलिए जब भी कभी आप इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सम्बन्धित कोर्सों में प्रवेश लेना चाहें तो इस बात से भली–भाँति सन्तुष्ट हो जायें कि जिस संस्थान से आप अपने पुत्र या आश्रित को कोर्स कराने जा रहे हैं क्या वह संस्थान बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0, से अधिकृत संस्थान है अथवा नहीं यदि कोई अन्य संस्थान है तो उक्त संस्थान की वैधानिक स्थिति क्या है, क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक में बैचलर व मास्टर कोर्सों का संचालन निषेध है।

याद किये गये डा0 वी0बी0 सिन्हा

तूम न जाने किस जहाँ में खो गये

इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पितामाह डा0 नन्द लाल सिन्हा को कौन नहीं जानता ! उनके छोटे पुत्र डा0 विपिन बिहारी सिन्हा जिन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में डा0 वी0बी0 सिन्हा को देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक भली–भाँति जानते हैं वे आज हमारे बीच अवश्य नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में किये गये कार्यों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज आज भी याद करता है।

वैसे तो डा0 वी0बी0 सिन्हा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ–साथ सरकारी नौकरी में एक प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत थे, यह कहना कदापि अतिश्योक्ति न होगा कि उनके हृदय व मन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी बसी थी उनको अपने पिताश्री से इलेक्ट्रो होम्योपैथी विरासत में मिली थी, पिता डा0 एन0 एल0 सिन्हा के देहान्त के बाद उनका मन विचलित होने लगा और इन्होंने अपने अन्तरात्मा की आवाज़ को प्राथमिकता देते हुये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हितों में ध्यान में रखते हुये इन्होंने सरकारी पद से त्याग दिया और पूर्ण रुप से इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर अपना जीवन अर्पण कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपनी सेवायें देने लगे।

डा0 वी0 बी0 सिन्हा

यह यर्थात सत्य है कि

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।

को करि तर्क बढ़ावे साखा।।

अन्ततः जो प्रभू को मंजूर था वही हुआ दिनांक 06 मई, 2014 को इस महानायक ने अलविदा दोस्तों कहते हुये अन्तिम सांस लेकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी प्रेमियों के बीच से रुखसत हो गये, जीवन के अन्तिम छड़ो में डा0 वी0 बी0 सिन्हा से भेंट करने बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई (अब स्वर्गीय) तथा केन्द्रीय सचिव डा0 मो0 इदरीस खान एक साक्षात्कार लेने गये थे साक्षत्कार देने के पश्चात डा0 इदरीसी ने डा0 वी0बी0 सिन्हा से कुशल क्षेम भी पूछा था डा0 सिन्हा ने मुस्कुराते हुये कहा डा0 इदरीसी जी लगता है अब समय पूरा हो गया है सम्भवतः यह उनकी अन्तरात्मा की आवाज़ थी, डा0 सिन्हा अवश्य आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनका आशीर्वाद सदैव हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ को है, अब वर्तमान में सभी कार्य उनके पुत्र डा0 दीपक सिन्हा द्वारा देखा जा रहा है।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आदेश प्राप्त, इहमाई द्वारा अनुमोदित)

8– लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ–226001

प्रशा0 कार्यालय : 127/204 "एस" जूही, कानपुर–208014

website- www.behm.org.in Email: registrarbehmup@gmail.com

प्रवेश सूचना

F.M.E.H. दो वर्ष (चार सेमेस्टर) – इण्टरमीडियेट अथवा समकक्ष

G.E.H.S. चार वर्ष+(1 वर्ष इन्टर्नशिप) – 10+2 जीव विज्ञान अथवा समकक्ष

P.G.E.H. दो वर्ष – G.E.H.S अथवा चिकित्सा स्नातक

C.E.H. एक वर्ष – हाई स्कूल अथवा समकक्ष

A.C.E.H. एक सेमेस्टर – किसी भी चिकित्सा पद्धति में न्यूनतम दो वर्ष का पाठ्क्रम उत्तीर्ण (इलेक्ट्रो होम्योपैथी 30 अप्रैल, 2004 से पूर्व/पैरा मेडिकल /किसी राजकीय चिकित्सा परिषद द्वारा पंजीकृत/ सूचीकृत चिकित्सक)

विस्तृत जानकारी हेतु बोर्ड की अधिकृत संस्थाओं से सम्पर्क करें अथवा **www.behm.org.in पर log in** करें।

LIST OF AUTHORISED INSTITUTIONS

Code	Name of Institute	Address	District	Name of Principal	Name of Manager	Mobile No.
01	Ashish Electro Homoeopathic Medical Insitute	Chajlapur, Po: I.T.I.,Door Bhash Nagar	RAIBARELI	Dr. P. N. Kushwaha	Dr. P. N. Kushwaha	9935318306
03	Awadh Electro Homoeopathic Medical Insitute	Shri Om Sai Dham,Indrpuri Colony,Sitapur Road	LUCKNOW	Dr. R. K. Kapoor	Smt. Sunita Kapoor	8299165010
05	Bhagwan MahaveerElectro Homoeopathic Insitute	Pan Dareeba	JAUNPUR	Dr. Pramod Kr. Maurya	Smt. Sushila Maurya	9451162709
06	Mas sarju Devi Electro Homoeopathic Medical Insitute	2537, Mishrana	LAKHIMPUR	Dr. R. K. Sharma	Dr. R. K. Sharma	8115545675
11	Chandpar Electro Homoeopathic Medical Insitute	Anjan Shaheed	AZAMGARH	Dr. Mushtaq Ahmad	Dr. Iftekhar Ahmad	9415358163
13	Azad Electro Homoeopathic Medical Insitute	Kintoor	BARABANKI	Dr. Habib-ur Rahman	Dr. Habib-ur Rahman	8052791197
15	Electro Homoeopathic Medical Insitute	Mahmanshah, Near Charkhamba	SHAHJAHANPUR	Dr. Ammar-Bin-Sabir	Dr. S.A. Siddique	9336034277
16	Shahganj Electro Homoeopathic Medical Insitute	Khas Bhadi, Shahganj	JAUNPUR	Dr. S. N. Rai	Dr. Rajendra Prasad	9450088327
17	Prema Devi Electro Homoeopathic Medical Institute	Siddhaith Children Campus, Arya Nagar	SIDDHARTH NAGAR	Dr. Ved Prakash Srivastav	Dr. V.P. Srivastav	9415669294

LIST OF AUTHORISED STUDY CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
52	Dr. Pradeep Kumar Srivastava	8/366 Tube Well Colony	DEORIA	9415826491	
53	Dr. Bhoop Raj Shrivastava	120-Basheerganj	BAHRAICH	9451786214	
55	Dr. Ayaz Ahmad	Beneath K.G.S. Gramir Bank, Walidpur	MAU	9305963908	
56	Dr. Gaya Prasad	Aarti Electro Homoeopathic Study Centre, Barkhera	JALAUN	8874429538	
57	Dr. N. Bhushan Nigam	B.K.E.H. Study Centre, Patkana	HAMIRPUR	9889426312	
59	Dr. Mohammad Israr Khan	Araw Road, Sirsaganj	FIROZABAD	9634503421	
60	Dr. Mohd. Akhlak Khan	128- Katra Purdal Khan	ETAWAH	7417775346	
61	Dr. Shiv Kumar Pal	Prem Nagar, Dak Banglow Bye Pass Road	FIROZABAD	9027342885	
62	Dr. Prince Srivastav	Hameed Nagar Ward No-3, Nautanwa	MAHARAJGANJ	7398941680	mpsr31@gmail.com
63	Dr. Ram Autar Kushwaha	Kushwaha Electro Homoeopathic Study Centre	KANPUR	9793261649	

LIST OF AUTHORISED STUDY/GUIDENCE CENTRES OTHER STATE

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
81	Dr. Devendra Singh	374/4 Shahid Bhagat Singh Colony, Karawal Nagar	DELHI-110090	9818120565	9873609565

LIST OF AUTHORISED EXAMINATION CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
91	Dr. P. K. Ragahav	Khurja	BULAND SHAHAR	9837897021	
92	Dr. S.K. Saxena	Parker College Road	MORADABAD	8171869605	
93	Electro Homoeopathic Exam	Registrar B.E.H.M. U.P. Kanpur Campus	KANPUR	0512-2970704	
95	Dr. Vikas	303/6 Gyan Nagar, Purkhas Road	SONIPAT-131001	9639300426	7302653934

Registrar

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।